कविवर राजमलजी पवैया द्वारा रचित

।। लघु समयसार विधान ।।

मंगलाचरण

(अनुष्टुप्)

मंगलं सिद्ध परमेष्ठी मंगलं तीर्थंकरम्।
मंगलं शुद्ध चैतन्यं आत्मधर्मोऽस्तु मंगलम्।।

(चामर)

वीतराग श्री जिनेन्द्र ज्ञान रूप मंगलम्।
गणधरादि सर्व साधु ध्यानरूप मंगलम्।।
आत्मधर्म वस्तु धर्म सार्व धर्म मंगलम्।
वस्तु का स्वभाव ही अनाद्यनंत मंगलम्।।
परम श्रुतकेवली भद्रबाहु मंगलम्।
गमक शिष्य पट्टधर कुन्दकुन्द मंगलम्।।
अमृतचन्द्र सूरि आचार्य देव मंगलम्।
पद्मनंदि जयसेनाचार्य देव मंगलम्।।
सर्व श्रेष्ठ समयसार ग्रंथराज मंगलम्।
शुद्ध कार्य कारण एक समयसार मंगलम्।।
आत्मतत्त्वरूप निज समयसार मंगलम्।
एक मात्र ज्ञान प्राप्ति का उपाय मंगलम्।।

(अनुष्टुप्)

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकासते।
चित्स्वभावाय भावाय सर्वभावान्तरच्छिदे।।
अनन्तधर्मणस्तत्त्वं पश्यन्ती प्रत्यगात्मनः।
अनेकान्तमयी मूर्तिर्नित्यमेव प्रकाशताम्।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्

(दोहा)

मंगलोत्तम शरण हैं केवल चार प्रसिद्ध।
इनका आश्रय प्राप्त कर प्राणी होते सिद्ध।।
समयसार ग्रंथेश को बारम्बार प्रणाम।
समयसार का सार ही निज अनंत गुणधाम।।
वर्धमान जिन वीर को सविनय शीश झुकाय।
रचूँ महा विधान यह भविजन को सुखदाय।।
मैं अल्पज्ञ प्रसिद्ध हूँ लघु है अक्षर ज्ञान।
भूल-चूक जो हो कहीं क्षमा करें भगवान।।

(अनुष्टुप्)

नमः दिव्यध्वनि पावन स्व-पर ज्ञान प्रकाशिनी।
त्रिभुवनजयी मंगलमयी साम्राज्य श्रेष्ठ प्रदायिनी।।

नमः पंचास्तिकायाय वस्तुतत्त्व प्रकाशकम्।
नमः समयसाराय नवपदार्थ प्रकाशकम्।।
नमः प्रवचनसाराय दिव्यध्वनिप्रकाशकम्।
नमः नियमसाराय मोक्षमार्गप्रदर्शकम्।।
नमः अष्टपाहुडाय मुक्तिमार्ग-विकासकम्।
नमः कुन्दकुन्दाचार्यो रत्नत्रय स्वरूपकम्।।
नमः भेदज्ञानाय मुक्ति सौख्य प्रदायकम्।
ज्ञान ध्यान वैराग्य मुक्तिमार्ग स्वदृश्यकम्।।
नमः केवली अर्हन् पुण्य-पाप विनाशकम्।
नमः केवलज्ञान स्वपर ज्ञानप्रकाशकम्।।

(दोहा)

चौरासी पाहुड़ लिखे कुन्दकुन्द मुनिराज।
थोड़े से उपलब्ध हैं लुप्त हुए बहु आज।।

सीमन्धर की दिव्यध्वनि सहज हुई है प्राप्त।
समयसार के ज्ञान से शिव-सुख होगा व्याप्त।।

(वीरछंद)

मंगलमय पंचास्तिकाय मंगलमय प्रवचनसार महान।
मंगल समयसार प्राभृत मंगलमय नियमसार गतिमान।।
मंगल जयति अष्टपाहुड़ मंगलमय परमागम ज्ञान।
चौरासी पाहुड़ मंगल हैं जय जय जिनश्रुत महा महान।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्/क्षिपामि

पीठिका

(छंद-गीतिका)

समयसार पवित्र परमागम प्रसिद्ध प्रधान है।
ग्रंथाधिराज महान इसमें भरा सम्यग्ज्ञान है।।
कुन्दकुन्दाचार्य ऋषिवर ने रचा जिन शास्त्र यह।
द्रव्य तत्त्व पदार्थ का सम्यक् स्वरूप सुशास्त्र यह।।

नाथ सीमंधर प्रभो की दिव्यध्वनि इसमें निहित।
गमक गुरु श्री भद्रबाहु महान श्रुतकेवलि कथित।।
गमक शिष्य सु कुन्दकुन्दाचार्य द्वारा यह रचित।
गुण अनंतानंत रत्नों से सुशोभित मणि खचित।।

कुन्दकुन्दाचार्य को मैं विनय से वंदन करूँ।
भाव निर्मल बनाकर मुनिवर चरण अर्चन करूँ।।
जन्म दक्षिण कोण्डकुण्ड नगर हुआ प्रभु एक दिन।
वर्ष ग्यारह लघु अवस्था में हुए निर्ग्रंथ मुनि।।

वर्ष बाईस में हुए आचार्य गुरु निज कार्य को।
वर्ष बानवे स्वर्ग पाया छोड़ सर्व विकार्य को।।
वर्ष बीते दो सहस्र श्री कुन्दकुन्दाचार्य को।
पद्मनंदि, गृद्धपिच्छ वक्रग्रीव एलाचार्य को।।

दिव्य चारण ऋद्धि पाकर गए आप विदेह क्षेत्र।
लखा सीमंधर प्रभो को धन्य-धन्य हुआ स्वक्षेत्र।।
आठ दिन तक सुनी वाणी दिव्यध्वनि कल्याणमय।
आत्म द्रव्य महान शिवमय सर्वदा है ध्यानमय।।

समय का जो सार पाया आपने विस्तार से।
शीघ्र भारत वर्ष में आ जुड़े धर्म प्रचार से।।
लिखे चौरासी सुपाहुड़ आत्मध्यानी ज्ञान ले।
समयपाहुड़ श्रेष्ठ यह ग्रंथाधिराज प्रधान ले।।

पंचपरमागम रचे जो आज भी उपलब्ध हैं।
शेष पाहुड़ हुए विस्मृत जो न अब उपलब्ध हैं।।
कुन्दकुन्दाचार्य देव प्रणीत जिनश्रुत समयसार।
परमश्रुत ग्रंथाधिराज परम आगम नमस्कार।।

समयसार महान रचना आप के द्वारा हुई।
श्रेष्ठ प्रवचनसार रचना ज्ञान निज द्वारा हुई।।
ज्ञान का भंडार श्री पंचास्तिकाय महान है।
नियमसार महान पावन मुनि नियम की शान है।।

अष्टपाहुड़ ग्रंथ उत्तम वीतरागी साधु हित।
मोक्षमार्ग महान दाता ज्ञान है जिसमें अमित।।
आपके उपकार को क्या भूल सकते हैं कभी।
सारभूत पदार्थ पाकर हृदय में पुलकित सभी।।

वर्ष जीवित बानवे रह देह परिवर्तन किया।
आत्मधर्म प्रसार करके निज समाधिमरण लिया।।
समसयार महान परमागम स्व-रस उर में भरूँ।
समयसार विधान रचकर आत्म का चिन्तन करूँ।।

भूल इसमें बहुत होंगी क्षमा कर देना प्रभो।
अल्पज्ञानी जानकर त्रुटि से रहित करना विभो।।
यह विनय स्वीकार कर प्रभु ज्ञान का आधार दो।
शुद्ध चिन्मय प्राप्ति का ही बल अपूर्व अपार दो।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्/क्षिपामि

(दोहा)

समयसार अरहंत हैं समयसार ही सिद्ध।
समयसार ही साधु हैं परमेष्ठी सुप्रसिद्ध।।
जो भी अप्रतिबुद्ध हैं उनका हो कल्याण।
दर्शन मोह विहीन हो पाएँ दृढ़ श्रद्धान।।
सम्यग्दर्शन के बिना सूना है सब ज्ञान।
सम्यग्ज्ञान प्रभाव से पाएँ पद निर्वाण।।
इसी भावना से रचा कुन्दकुन्द ने ग्रंथ।
हो जाएँ प्रतिबुद्ध सब मिले मुक्ति का पंथ।।

(नागचंपा)

निज समयसार की जो बात कभी सुनता है।
अपनी शुद्धात्मा के गुण अनंत गुनता है।।
मोह-रागादि का द्रह पूर्ण नाश कर देता।
मुक्ति का मार्ग वही स्वरुचि सहित चुनता है।।
जो नहीं सुनता समयसार मोह के वश हो।
वही पछताता है हर बार शीश धुनता है।।
जिसने मिथ्यात्व नाश प्राप्त किया है समकित।
वही तो मोक्ष के विशाल वस्त्र बुनता है।।
शुद्ध चिद्रूप त्रिकाली का ही लेता आश्रय।
मुक्ति का भव्य भवन अपने हाथ चिनता है।।

(माधव मालती)

आत्म के उद्धार का बस एक क्षण मुझको मिला है।
यही क्षण पाकर सदा को मन-कमल तेरा खिला है।।
मुक्ति-मार्ग महान पाया, स्वयं सम्यग्ज्ञान आया।
दीप रत्नत्रय जगा है सौख्य निज उर में झिला है।।

भेदज्ञान अपूर्व पाया स्व-पर ज्ञान सहज सुहाया।
महल इस मिथ्यात्व का भी इसी क्षण पूरा हिला है।।
मोह-तरु के पात झर गए परविभावी भाव हरकर।
गुण अनंत प्रकट हुए हैं आज निज आँचल छिला है।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्/क्षिपामि

... संक्षिप्त परिचय ...

(चौपाई)

समयसार का यह लघु रूप, समयसार यह पूर्ण अनूप।
निर्णय करता आत्मस्वरूप, चिदानन्द चेतन चिद्रूप।।
गाथा चार शतक पंद्रह, साररूप केवल पंद्रह।
शेष सर्व में है विस्तार, दिव्यध्वनि का इसमें सार।।

यदि करना है निज कल्याण, पढ़ो सुनो समझो मतिमान।
समयसार का पा लो सार, पाओ छवि निर्मल अविकार।।
दर्शन ज्ञान चरित्र अनूप, शुद्धात्मा निज ज्ञायक रूप।
शुद्ध बुद्ध है ध्रौव्य त्रिकाल, दर्शन-ज्ञानमयी सुविशाल।।

सुन लो कुन्दकुन्द के बैन, पाओगे सुख शाश्वत चैन।
विलसोगे आनंद विशाल, सादि अनंतानंत स्वकाल।।
सब सिद्धों को वन्दन कर, मन की सकल कलुषता हर।
पढ़ो सुनो समझो चित लाय, समयसार निज शिवसुखदाय।।

सहजानंदी सुख कर प्राप्त, हो जाओगे अर्हद् आप्त।
कर प्रत्येक समय निज ध्यान, करो आत्मा का कल्याण।।
जय जय समयसार भगवान, जय जय श्री अरिहंत महान।
जय जय सर्वसिद्ध जगदीश, जय जय तत्त्वबोध निज ईश।।

जय जय समयसार अमलान, जय जय लघु सर्वोच्च विधान।
समयसार ही मंगल रूप, जय जय जय शुद्धात्म स्वरूप।।
अब न रहूँगा अप्रतिबुद्ध, बन जाऊँगा मैं प्रतिबुद्ध।
कर्ता कर्म प्रवृत्ति तजूँ, समयसार शिवरूप भजूँ।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्/क्षिपामि

श्री लघु समयसार विधान पूजन

स्थापना

(अर्ध कुंडलिया)

शुद्ध भावना सिंधु है, समयसार सिरताज।
निज पुरुषार्थ स्व शक्ति से, हो जाऊँ जिनराज।।
हो जाऊँ जिनराज ज्ञान कैवल्य प्रकट कर।
बंध हेतु पाँचों को ही सम्पूर्ण विघट कर।।
ज्ञान भावना ही मेरे अंतर में जागे।
प्रथम मोह मिथ्यात्व पूर्णत: मेरा भागे।।

(दोहा)

पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति कर हो जाऊँ अविकार।
सर्व कलुषता नष्ट कर जीतूँ यह संसार।।

समयसार पूजन करूँ, भक्ति सहित जिनराज।
हो जाऊँ प्रतिबुद्ध मैं, पाऊँ निज पद राज।।

अविरति द्वितिय विनाश कर, संयम धरूँ महान।
भाव द्रव्य मुनि बनूँ मैं, करूँ आत्मकल्याण।।

तृतिय प्रमाद विनष्ट कर, बन जाऊँ अप्रमत्त।
श्रेणी चढ़ पाऊँ प्रभो, पद सर्वज्ञ स्वरत्त।।
चार कषाय विनाश कर, हो जाऊँ सर्वज्ञ।
सकल ज्ञेय ज्ञायक महा हो जाऊँ आत्मज्ञ।।
तीनों योग अभाव कर, बनूँ सिद्ध परमेश।
शुद्ध स्वपद की प्राप्ति कर, हो जाऊँ लोकेश।।
समयसार निज सार पा, नष्ट करूँ संसार।
पाऊँ आत्मोत्पन्न सुख, हे प्रभु अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक श्री परमागम-समयसार! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वानम्।)

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक श्री परमागम-समयसार! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्।)

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक श्री परमागम-समयसार! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्) पुष्पांजलिं क्षिपेत्/क्षिपामि।

छंद-सखी

प्रभु सम्यक् नीर चढ़ाऊँ। शिव पथ पर चरण बढ़ाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर-गिरि से चंदन लाऊँ। भव-आतप पर जय पाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर अक्षत लाऊँ। निज अक्षय पद प्रकटाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रतिकर गिरि पुष्प मँगाऊँ। दुष्काम-बाण विनशाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि दधिमुख सुचरु चढ़ाऊँ। भव भूख पूर्ण विनशाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय क्षुधारोगविध्वंसनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन-गिरि दीप चढ़ाऊँ। मोहान्धकार विघटाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुजोत्तर धूप सजाऊँ। कर्मों के पुंज जलाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल कुण्डलवर से लाऊँ। मैं महामोक्ष फल पाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमामय शुद्ध स्वरूपी। मैं ध्रुव्र चेतन चिद्रूपी।
मैं ही हूँ दृष्टा-ज्ञाता। मेरा तो जिन से नाता।।
सर्वार्थसिद्धि ना जाऊँ। निज गुणमय अर्घ्य सजाऊँ।
निज समयसार को ध्याऊँ। चिन्मय की महिमा पाऊँ।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

(दोहा)

ज्ञान भाव की प्राप्ति कर हो जाऊँ प्रतिबुद्ध।
आत्मज्ञान चिन्मात्र से हो जाऊँ मैं शुद्ध।।

मिथ्यात्वादिक भाव का कर दूँ पूर्ण अभाव।
बंध हेतु इस दुष्ट को दिखलाऊँ स्व-स्वभाव।।

स्व-स्वभाव को देखकर भागे यह तत्काल।
इसका तो स्थान है बस निगोद पाताल।।

अब तो इसकी शक्ति का कर दूँगा संहार।
समयसार की भक्ति से लूँगा सौख्य अपार।।

महा अर्घ्य अर्पित करूँ, समयसार को आज।
समयसार का सार ग्रहण कर, पाऊँ पूर्ण स्वराज।।

(नाराच)

मेरा ज्ञायक स्वभाव तीन लोक में प्रसिद्ध।
एक दिन यही संसार नाश होगा सिद्ध।।
यही अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय।
यही साधु पंच परम परमेष्ठी सौख्यदाय।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

(नागचंपा)

रागों की परिणति ने मुझको पछाड़ दिया।
मोह मद राग द्वेष ने मुझे बिगाड़ दिया।।
संसारी जीवों को इसने भुलाया है।
इसने चौरस्ते पर मुझको पछाड़ दिया।।

मेरे स्वरूप के सुन्दर निवास को।
मिथ्यात्व भाव ने पूरा उजाड़ दिया।।
मेरा भी दाव चला जीता मिथ्यात्व को।
संसार-वृक्ष मैंने जड़ से उखाड़ दिया।।

(पंचचामर)

अनादि से ही बंध कथा सुन रहा हूँ मैं।
राग-द्वेष कीच बीच सन रहा हूँ मैं।।
मोह-काम विषय भोग राग दुखरूप हैं।
बंध आस्रवादि के जाल बुन रहा हूँ मैं।।
सन्मार्ग आज मिला गुरुदेव मिल गए।
उनके अनुसार मार्ग चुन रहा हूँ मैं।।
निर्जरा को पाने का यत्न किया अब शुरू।
संवर के वस्त्र प्रथम बुन रहा हूँ मैं।।

(राधिका)

निज समयसार को जिसने अपना माना।
सद्धर्म तत्त्व कथनी को उसने जाना।।
जो राग रहित है वह भवदधि से ऊबा।
जो राग सहित है वह भवदधि में डूबा।।
रागी व्रत समिति धरे उत्कृष्टालंबन।
हैं मिथ्यादृष्टि उसे है भव-दुख क्रन्दन।।
परद्रव्यों के प्रति राग जिसे है उर में।
वह सदा रहेगा जीव इसी भवपुर में।।
पर द्रव्य राग विरहित है जो निजपुर में।
वह तो अब जाएगा ही ध्रुव शिवपुर में।।

वस्तुत्व स्वयं विस्तरित कर रहा ज्ञानी।
वस्तुत्व क्षीण कर रहा स्वतः अज्ञानी।।
जो कर्म विपाक उदय को ही तजता है।
ज्ञायक स्वभाव निज जान उसे भजता है।।
ज्ञानाभ्यास से आत्मतत्त्व मिलता है।
ज्ञानी उर में संतोषाम्बुज खिलता है।।
जिसको प्रकाश उज्ज्वल अम्लान मिला है।
उसका उद्योतित निर्मल ज्ञान झिला है।।
कर्मादिक जड़ पुद्गल परिणाम पिछानो।
उपयोग कर्म से रहित सर्वथा मानो।।
चैतन्य धातु निर्मित स्वभाव अविनाशी।
शाश्वत यह युगपत् लोकालोक प्रकाशी।।
जब तक व्यभिचारी भाव हृदय में तेरे।
तो अव्यभिचारी भाव न होंगे तेरे।।
अस्थायी भावों का तू तज दे वर्तन।
स्थायी भावों का ही कर आस्वादन।।
परमार्थ रूप रस का ही स्वाद सलोना।
आलोकित कर ले मन का कोना-कोना।।
अनुभव गोचर निज आत्मतत्त्व को ग्रह ले।
रागादि विकारी भावों को अब दह ले।।
ज्ञायक का निर्मल स्वाद अभी ले प्राणी।
भव-द्वंद्वमयी भावों को तज दे मानी।।

ॐ ह्रीं स्वसमयप्ररूपक-श्रीपरमागमसमयसाराय जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद

(ताटंक)

स्वानुभूति-मय चमत्कार-युत, समयसार मैंने पाया।
शुद्ध आत्मवैभव का सागर, उमड़ उमड़ कर लहराया।।
ज्ञान-प्राप्ति का मेरा उद्यम, सफल हो गया हे जिनराज।
अप्रतिबुद्ध न रहा आज मैं, आज हो गया ध्रुव शिवराज।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्/क्षिपामि

लघु समयसार : अर्घ्यावलि

(दोहा)

समयसार को समझकर, पाओ सम्यग्ज्ञान।
इसी ज्ञान की शक्ति से, करो कर्म अवसान।।

(1)

अब सूत्रकार श्रीमद्भगवत् कुन्दकुन्दाचार्य देव ग्रन्थ के प्रारम्भ में मंगलपूर्वक प्रतिज्ञा करते हैं -

वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गदिं पत्ते।
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवलीभणिदं।।1।।

ॐ ह्रीं निजध्रुव-अचल-अनादिसिद्धस्वरूप-समयसाराय नमः।

।। सिद्धस्वरूपोऽहम् ।।

(मानव)

ध्रुव-अचल सुअनुपम गति पति वंदन है सब सिद्धों को।
श्रुतकेवलि कथित कहूँगा मैं समयसार प्राभृत को।।
यह भाव द्रव्य मंगल ही कल्याणमयी है स्वामी।
आत्मानुभूति का साधन स्वात्मानुभूतिमय नामी।।

निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2)

प्रथम गाथा में समय का प्राभृत कहने की प्रतिज्ञा की है। अतः यह आकांक्षा होती है कि समय क्या है? अतः पहले समय को ही कहते हैं -

जीवो चरित्तदंसणणाणट्ठिदो तं हि ससमयं जाण।
पोग्गलकम्मपदेसट्ठिदं च तं जाण परसमयं।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनज्ञानचारित्रस्वरूप-कारणसमयसाराय नमः।

।। कारणसमयसारस्वरूपोऽहम् ।।

जो दर्शन ज्ञान चरित में थित हैं निश्चय से स्व समय।
जड़ पुद्गल कर्म प्रदेशों में थित हैं वही पर समय।।
निज समयसार वैभव को अंतर में प्रकटाऊँगा।
मैं कारण-कार्य समय हूँ आपूर्ण सौख्य पाऊँगा।।
परसमयी जो होते हैं वे भव-पीड़ा पाते हैं।
जो स्वसमयी होते हैं वे सुख अनंत पाते हैं।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3)

अब समय की द्विविधता में आचार्य बाधा बतलाते हैं -

एयत्तणिच्छयगदो समओ सव्वत्थ सुंदरो लोए।
बंधकहा एयत्ते तेण विसंवादिणी होदि।।3।।

ॐ ह्रीं एकत्व-विभक्त-कारणसमयसाराय नमः।

।। एकत्वविभक्तस्वरूपोऽहम् ।।

एकत्व समय निश्चयगत सर्वत्र लोक में सुन्दर।
पर-संग की कथनी प्रतिपल है विसंवाद बंधन कर।।
पर-भावों को अब तज दूँ नहिं व्यर्थ विवादों में रम।
पर से मैं सदा पृथक् हूँ अपने स्वभाव में ही जम।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4)

अब उस एकत्व की असुलभता बताते हैं -

सुदपरिचिदाणुभूदा सव्वस्स वि कामभोगबंधकहा।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स।।4।।

ॐ ह्रीं उत्कृष्टापूर्व-समयसाराय नमः।

।। अपूर्वस्वरूपोऽहम् ।।

कथनी जु भोग बंधन की अनुभवगत श्रुत परिचित है।
पर से सु पृथक् एकत्व की उपलब्धि सदा दुर्लभ है।।
पर-कथनी अज्ञानी की ज्ञानी की कभी न पल भर।
उसको ही सहज बनाऊँ जो है अनुभव रस निर्भर।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।।

(5)

अब आचार्य कहते हैं कि इसीलिये जीवों को उस भिन्न आत्मा का एकत्व बतलाते हैं -

तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण।
जदि दाएज्ज पमाणं चुक्केज्ज छलं ण घेत्तव्वं ।।5।।

ॐ ह्रीं निजपरमवैभवधारक-कारणसमयसाराय नमः।

।। अनन्तगुणवैभवस्वरूपोऽहम् ।।

एकत्व-विभक्त आत्मा दर्शाऊँ निज वैभव से।
करना प्रमाण यदि चूकूँ छल ग्रहण न करना भ्रम से।।
मिथ्यात्वमयी भाषा मैं ज्ञानी की कभी न मानूँ।
उपलब्धि ज्ञान की पावन प्रतिक्षण निज उर में आनूँ।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि ऐसा शुद्ध आत्मा कौन है, जिसका स्वरूप जानना चाहिए? इसके उत्तरस्वरूप गाथासूत्र कहते हैं -

ण वि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणगो दु जो भावो।
एवं भणंति सुद्धं णादो जो सो दु सो चेव ।।6।।

ॐ ह्रीं प्रमत्ताप्रमत्तभावरहित-समयसाराय नमः।

।। प्रमत्ताप्रमत्तभावरहित-चारित्रस्वरूपोऽहम् ।।

जो अप्रमत्त भी नाहीं, नाहीं प्रमत्त है पल भर।
वह ज्ञायक भाव शुद्ध है वह तो वह ही है सुखकर।।
नित्योद्योत होने से ही क्षणिक नहीं है ज्ञायक।
है सत्ता रूप अनादि से निश्चय अभेद शिव-नायक।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अतंरग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(7)

अब प्रश्न यह होता है कि दर्शन, ज्ञान और चारित्र को आत्मा का धर्म कहा जाता है, किन्तु यह तो तीन भेद हुए और इन भेदरूप भावों से आत्मा को अशुद्धता आती है?

ववहारेणुवदिस्सदि णाणिस्स चरित्त दंसणं णाणं।
ण वि णाणं ण चरित्तं ण दंसणं जाणगो सुद्धो।।7।।

ॐ ह्रीं अखण्डैकशुद्धस्वभाव-समयसाराय नमः।

।। अखण्डैक-स्वरूपोऽहम् ।।

चारित्र ज्ञान दर्शन ही व्यवहार कहे ज्ञानी के।
ना है चरित्र ना दर्शन, ना ज्ञान, शुद्ध ज्ञायक में।।
ज्ञायक केवल ज्ञायक है इसमें न भेद है किंचित्।
निश्चय अभेद है केवल यह तो अखंड है निश्चित।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(8)

अब यहाँ पुनः प्रश्न उठता है कि यदि ऐसा है तो एक परमार्थ का ही उपदेश देना चाहिए, व्यवहार किसलिए कहा जाता है? इसके उत्तर स्वरूप गाथासूत्र कहते हैं -

जह ण वि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा दु गाहेदुं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवदेसणमसक्कं।।8।।

ॐ ह्रीं परमार्थस्वरूप-कारणसमयसाराय नमः।

।। परमार्थशुद्धस्वरूपोऽहम् ।।

भाषा अनार्य बिन समझाना ज्यों अनार्य को मुश्किल।
व्यवहार बिना निश्चय का उपदेश अशक्य सुनिर्बल।।

व्यवहार कथंचित् साधन अनुसरण योग्य ना किंचित्।
प्रतिपादक परमागम का अवलंबन कहो न निजहित।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(9)

अब प्रश्न यह होता है कि व्यवहारनय परमार्थ का प्रतिपादक कैसे है? इसके उत्तर-स्वरूप गाथासूत्र कहते हैं -

जो हि सुदेणहिगच्छदि अप्पाणमिणं तु केवलं सुद्धं।
तं सुदकेवलिमिसिणो भणंति लोयप्पदीवयरा।।9।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानस्वरूप-समयसाराय नमः।

।। परमार्थ-अनन्तज्ञानस्वरूपोऽहम् ।।

श्रुत द्वारा इस आत्मा को जो केवल शुद्ध पिछाने।
ऋषि मुनि यति लोकप्रकाशक श्रुतकेवलि उसको माने।।
श्रुतज्ञान सकल के धारी हैं वन्दनीय हम सबको।
वे ही परोक्ष ज्ञानी हैं वन्दन पाते हैं सबसे।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव-बंधन सब कट जाए।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(10)

फिर वही कहते हैं -

जो सुदणाणं सव्वं जाणदि सुदकेवलिं तमाहु जिणा।
णाणं अप्पा सव्वं जम्हा सुदकेवली तम्हा।।10।।

ॐ ह्रीं ज्ञानानन्दात्मस्वभाव-समयसाराय नमः।

।। ज्ञानानन्द-स्वरूपोऽहम् ।।

श्रुतज्ञान जानने वाले को श्रुतकेवलि जिन कहते।
सब ज्ञान आत्मा ही है इससे श्रुतकेवलि कहते।।
व्यवहार आत्मा को ही तो भेद रूप से कहता।
निश्चय परमार्थ स्व ज्ञायक को केवल ज्ञायक कहता।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भवबंधन सब कट जाए।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(11)

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि पहले यह कहा था कि व्यवहार को अंगीकार नहीं करना चाहिए, किन्तु यदि वह परमार्थ को कहने वाला है तो ऐसे व्यवहार को क्यों अंगीकार न किया जाये?

इसके उत्तरूप में गाथासूत्र कहते हैं -

ववहारो भूदत्थो भूदत्थो देसिदो दु सुद्धणओ।
भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मादिट्ठी हवदि जीवो।।11।।

ॐ ह्रीं भूतार्थस्वरूप-समयसाराय नमः।

।। भूतार्थस्वरूपोऽहम् ।।

व्यवहार जु अभूतार्थ है भूतार्थ शुद्धनय जानो।
भूतार्थ आश्रय आत्मा निश्चय सद्दृष्टि पिछानो।।
जल मल का भेद कतक फल से हो जाता है तत्क्षण।
कर्मों से भिन्न आत्मा पुरुषार्थ साध्य है प्रतिक्षण।।
है ग्रहण शुद्धनय का ही शाश्वत शिव सौख्य प्रदाता।
तज दिया शुद्धनय तो फिर दुख घनीभूत हो जाता।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव बंधन सब कट जाए।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(12)

अब ''यह व्यवहारनय भी किसी को किसी काल में प्रयोजनवान है, सर्वथा निषेध करने योग्य नहीं है, अतः उसका उपदेश है'' – यह कहते हैं –

सुद्धो सुद्धादेसो णादव्वो परमभावदरिसीहिं।
ववहारदेसिदा पुण जे दु अपरमे ट्ठिदा भावे।।12।।

ॐ ह्रीं परमपारिणामिकभाव–समयसाराय नमः।

।। परमपारिणामिकभावस्वरूपोऽहम् ।।

जो परम भाव को देखे ज्ञातव्य शुद्धनय उसको।
जो अपरम में ठहरा है व्यवहार उपदेश उसी को।।
अचलित अखंड ध्रुव ज्ञायक है एक स्वभाव रूप ही।
जो मध्यभावि प्राणी हैं वे हैं अनेक रूप ही।
इन बारह गाथाओं में ही समयसार है पूरा।
आगे का कथन सुविस्तृत ज्ञायक है नहीं अधूरा।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव बंधन सब कट जाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित–श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(13)

इस प्रकार ही शुद्धनय से जानना सो सम्यक्त्व है, सूत्रकार इस गाथा में यह कहते हैं –

भूदत्थेणाभिगदा जीवाजीवा य पुण्णपावं च।
आसवसंवरणिज्जरबंधो मोक्खो य सम्मत्तं।।13।।

ॐ ह्रीं सम्यक् चैतन्यलक्षणधारक–समयसाराय नमः।

।। चैतन्यस्वरूपोऽहम् ।।

भूतार्थ दृष्टि से जाने जो जीव अजीव पुण्य को।
निर्जरा पाप आस्रव को संवर अरु बंध मोक्ष को।।
ये ही सम्यग्दर्शन है नव तत्त्वरूप श्रद्धामय।
व्यवहार दृष्टि से जानूँ यह सम्यग्दर्शन सुखमय।।
यदि मोक्ष प्राप्त करना है बस बन जाऊँ मैं ज्ञायक।
नव तत्त्वों में जो बसता वह आत्मतत्त्व सुखदायक।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव बंधन सब कट जाए।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(14)

उस शुद्धनय को गाथा सूत्र से कहते हैं -

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णयं णियदं।
अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धणयं वियाणीहि।।14।।

ॐ ह्रीं अबद्धस्पृष्टसमयसाराय नमः।

।। अबद्धस्पृष्टस्वरूपोऽहम् ।।

जो नय आत्मा को देखे अनबद्ध और अस्पर्शी।
अन्यत्व रहित सुनियत हो संयोग रहित अविशेषी।।
उपर्युक्त पाँच भावों से जो देख रहा आत्मा को।
हे शिष्य शुद्धनय जानो तुम भजो स्व परमात्मा को।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव बंधन सब कट जाए।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(15)

अब इस अर्थरूप गाथा कहते हैं -

जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णमविसेसं।
अपदेससंतमज्झं पस्सदि जिणसासणं सव्वं।।15।।

ॐ ह्रीं अविशेषनियतस्वरूपसमयसाराय नमः।

।। नियतस्वरूपोऽहम् ।।

अनबद्ध अस्पृष्ट अनन्य, अविशेष जु आत्मा देखे।
वह द्रव्य भाव श्रुतज्ञानी जिनशासन पूरा देखे।।
निश्चय से जिनशासन की अनुभूति उसे होती है।
ज्ञानानुभूति होती है स्वात्मानुभूति होती है।।
पर से तू सदा पृथक् है निज से तू सदा अपृथक्।
ज्ञायक तो बस ज्ञायक है निज दृष्टि बना तू सम्यक्।।
निज समयसार की महिमा प्रभु अंतरंग में आए।
मैं समयसार बन जाऊँ भव बंधन सब कट जाए।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वरंगसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समस्त अधिकारों की अर्घ्यावलि

1. पूर्वरंग अधिकार

(ताटंक)

समयसार का पूर्वरंग ही मिथ्या-भ्रम हर लेता है।
जीवों को प्रतिबुद्ध बनाता सम्यग्दर्शन देता है।।
अष्ट-दोष-मद अनायतन छह तीन शल्य का करता नाश।
शुद्ध आत्मा में रहने से मिल जाता है ज्ञान-प्रकाश।।
भव-बाधाएँ मिट जाती हैं पर विभाव होते चकचूर।
हो जाता व्यवहाररहित निश्चयनय होता है भरपूर।।
प्राणी होते नयातीत निज द्रव्यदृष्टि हो जाती है।
हो जाते पक्षातिक्रान्त पर्यायदृष्टि उड़ जाती है।।

अंतिम महार्घ्य

(पीयूष)

कल्पेन्द्र अरु वसुधेन्द्र करें नमन।
भवनेन्द्र जय सुन व्यतरेन्द्र करें नमन।।
इन्द्र रवि शशि तिर्यंचेन्द्र करें नमन।
भावपूर्वक हम करें प्रभु को नमन।।

(गीतिका)

कर्म युग ही धर्म युग है इसी में है धर्मध्यान।
इसी में संभव निरीक्षण आत्मा का है महान।।
समय की आराधना से मिट गया संसार-दुख।
पारिणामिक भाव जागा मिला शुद्ध अपार सुख।।

(वीरछंद)

विश्व-प्रेम जिनके उर में है, वे ही समयसार के भक्त।
जिन्हें विश्व से प्रेम नहीं है, वे न आत्मा के हैं भक्त।।
आध्यात्मिक गौरव के स्वामी, केवल होते हैं मुनिराज।
सम्यक् खमत खामना उनकी, ले जाती है भव के पार।।

अगर ईंट के बदले पत्थर, मारा तो मर जाएगा।
पत्थर के बदले पुष्पों की, वर्षा कर सुख पाएगा।।
मानव योनि प्राप्त करके भी, रहा स्वसंवेदन से दूर।
तो फिर तेरे दुख के सागर, भरते जाएँगे भरपूर।

अब उदात्तगुण का सौरभ, प्रस्फुटित हुआ निज अंतर में।
परम ज्ञान निज का धारण ही, रहता है अभ्यंतर में।।

ॐ ह्रीं एकादशाधिकारसमन्वित-श्रीपरमागमसमयसाराय-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाजयमाला

(मानव)

रजनी के अँधियारे को दिनकर उजियाला नाशे।
चेतन जाग्रत हो जाये अपना स्वरूप जब भासे।।
कर्मों की कड़ियाँ टूटें ध्वज समयसार फहराये।
आनंद अतीन्द्रिय धारा प्रतिपल प्रतिक्षण लहराये।।

परिणति निज पीछे दौड़े नित आँख-मिचौली खेले।
तो यह चैतन्य स्वरूपी अपनी बाहों में ले ले।।
भवसागर क्षय हो जाये जब समयसार निज ध्याये।
अपने स्वभाव के बल से अपने में पूर्ण समाये।।

जितने भी सिद्ध हुए हैं या जो आगामी होंगे।
अपने स्वभाव-साधन का बल पाकर ही वे होंगे।।

संयमित जीव जो होते वे ही शिवसुख पाते हैं।
अतिक्रमण किया करते जो वे ही भव-दुख पाते हैं।।

अपराध नहीं होगा तो फिर प्रायश्चित्त क्यों होगा।
अतिक्रमण नहीं होगा तो प्रतिक्रमण कहो क्यों होगा।।
अविरति का दोष नहीं तो फिर प्रत्याख्यान करूँ क्यों।
मैं स्वयं तीर्थपति जिन-सम तो करूँ तीर्थयात्रा क्यों।।

परिपूर्ण ज्ञान का सागर तो फिर अज्ञान हरूँ क्यों।
अतिसरण नहीं है तो फिर बोलो प्रतिसरण करूँ क्यों।।
निन्दा गर्हा जो भी हो वह मुझमें नहीं मिलेगी।
अविलंब चलूँ शिवपथ पर तो पंचम स्वगति मिलेगी।।
मैं अमृत-कुंड पूरा हूँ विष-कुम्भ सँभाल धरूँ क्यों।
मैं मुक्त स्वरूप सदा से भवभार विशाल हरूँ क्यों।।

(नाराच)

ज्ञान में ज्ञान के द्वारा ही ज्ञान होता ज्ञात।
फिर नहीं सुनने में आती है कोई पर की बात।।
गया अज्ञान हमेशा के लिए अपने घर।
अब नहीं आएगी मिथ्यात्व की वो काली रात।।

सूर्य सम्यक्त्व का पाया है हमेशा के लिए।
शुद्ध चारित्र का तरु फल गया व्रतों के साथ।।
जीता है दर्श मोह आज मैंने पहली बार।
घातिया कर्म न कर पाएँगे अब मेरा घात।।

मुक्ति का मार्ग हुआ पूर्ण अघाति भी गए।
सिद्ध सुख प्राप्त हुआ प्राप्त हुआ उज्ज्वल प्रात।।

(छंद-गुजराती)

सोनारो सूरज ऊग्यो म्हारे आँगणाँ माँ।।
रूपारी धूप आयी म्हारे प्रांगण माँ।

समकित के संग आयो ज्ञान अंतर माँ।।
सोते से जगायो म्हाने पलभर माँ।
सोनारो सूरज ऊग्यो म्हारे आँगणाँ माँ।।

सप्तम सीढ़ी पायी म्हाने आत्मध्यान री।
अष्टम सीढ़ी भी पायी म्हाने शुद्धज्ञान री।।
शुक्ल ध्यान छायो म्हारे कण कण माँ।
सोनारो सूरज ऊग्यो म्हारे आँगणाँ माँ।।

तेरवीं सीढ़ी मिली है ज्ञान कैवल्य री।
चौदहवीं सीढ़ी मिली है सिद्ध पद री।।
सोनारो सूरज ऊग्यो म्हारे आँगणाँ माँ।।

ॐ ह्रीं एकादशाधिकारसमन्तिव-श्रीपरमागमसमयसाराय महा-जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वाद (गीतिका)

समयसार विधान लघु पूरा हुआ सौभाग्य से।
शास्त्र पढ़ने का नियम मैंने लिया अब भाग्य से।।
भेद-ज्ञान महान पाने का करूँगा यत्न मैं।
करूँगा प्रतिबुद्ध बनने का महान प्रयत्न मैं।।
दो मुझे आशीष जिनवर करूँ मैं निज आत्मज्ञान।
आपके पथ पर चलूँ मैं हो मुझे समकित महान।।

(सोरठा)

समयसार का सार, पाऊँ प्रभु परिपूर्ण अब।
अष्ट कर्म अरि चूर्ण, समयसार निज से करूँ।।

इत्याशीर्वादः

।। जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्रीपरमागमसमयसाराय नमः ।।

शान्ति पाठ

छंद–मानव

अब पूर्ण शान्ति पाऊँ प्रभु है यही भावना मेरी।
सम्यक्त्व हृदय प्रकटाऊँ है यही प्रार्थना मेरी।।
त्रिभुवन में नाथ शान्ति हो कोई न दुखी हो स्वामी।
जीवन्त शक्ति प्रकटाएँ सब ही हैं अन्तर्यामी।।
जिनगुण सम्पत्ति प्राप्त हो अन्तर्मन अति निर्मल हो।
सिद्धों जैसा सुख पाएँ यह जीवन अति उज्ज्वल हो।।
भव का आताप न हो प्रभु अविचल अक्षय पद ध्याऊँ।
निज समयसार महिमा पा आनंद अतीन्द्रिय पाऊँ।।

(नौ बार णमोकार मंत्र पढ़कर कायोत्सर्ग करें।)

क्षमापना पाठ

(ताटंक)

इस विधान में हुई भूल तो उनको क्षमा करें तत्क्षण।
वत्सल निधि परमेश्वर भगवन दया करें प्रतिपल क्षण क्षण।।
ज्ञानभावना का आदर ही करूँ सतत मैं प्रभो विशेष।
निज चिद्रूप शुद्ध प्रकटाऊँ इस विधान का है उद्देश्य।।

(अनुष्टुप्)

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।।
सर्व–मंगल–मांगल्यं सर्वकल्याणकारकं।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम्।।

*****